bihar board 8th class sanskrit note | सामाजिक कार्यम्

पाठ 5 – सामाजिक कार्यम्

सामाजिक कार्यम्

(क्त , क्तवतु प्रत्यय)

[समाज व्यक्तियों का समुदाय है । प्रत्येक....
..... किया गया है ।
विज्ञानस्य विकासेन अद्य संसारः..... ध्यानाकर्षणाय वर्तन्ते ।

अर्थ – विज्ञान के विकास से आज संसार जबकि अनेक सुविधा प्राप्त करता है । लेकिन मनुष्यों में सामाजिक सम्पर्क क्रम से कम हो गया है । अपने घर में ही मनुष्य अनेक वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग कर दूसरों को नीच (कमजोर) मानते हैं । कभी इन उपकरणों के अभाव में परिवार में सदस्य भी उपकार करने वाले हो जाते थे । धीरे – धीरे (क्रम से) मानव के अकेलापन के कारण स्वार्थवाद का उदय हुआ । इस समय मनुष्य अपना हित की हो श्रेष्ठ मानते हैं । लेकिन समाज के सदस्य होने के कारण सबों का कर्तव्य है कि हरेक व्यक्ति के हित – अहित का चिन्तन करना चाहिए । कोई संकट से घिरा है । कोई मार्ग में दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है । कहीं बाढ़ से सममू गाँव का विनाश हो जाता है । कहीं निर्धन लोग परिवार पालने में असमर्थ हैं । कहीं बुढ़ेलोग उपेक्षित हैं । कभी घरों में आग लग गया । कहीं आने – जाने का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है । कहीं रास्ते में पेड़ गिर गया है । कहीं अनाथ बच्चे और दुर्बल महिलाएं हैं । सब सहायता की अपेक्षा रखते हैं । इसी प्रकार के ही समाज में अनेक समस्या लोगों को ध्यानाकर्षण के लिए हैं ।

एता : स्वार्थवादेन न .....मनुष्यः कार्यारम्भ समर्थः ।

अर्थ – इन सबों का समाधान स्वार्थवाद नहीं है । लेकिन परोपकार में लगे लोगों या कल्याण के काम में लगे रहने वाली संस्था से सम्भव है । सदैव सुख नहीं दिखता है । संकट किसी को भी कहीं भी हो सकता है । ऐसे समय में ही सामाजिक कार्यों का लोग अपेक्षा करते हैं । ये सब सामाजिक कार्य संकट काल में ही नहीं होता बल्कि समाज के विकास के लिए अपने गाँव या शहर उन्नति के लिए भी यह किया जाता है । जैसे — कोई सामाजिक संस्था सम्पूर्ण गाँव को स्वच्छ करता है । रास्ते में वृक्षारोपण , कुआँ , तालाब आदि जलाशयों की व्यवस्था , खाली (परती) खेतों में बगीचे का लगाना , कहीं पुस्तकालय , व्यायामशाला या सामुदायिक भवन का प्रबन्ध भी किसी को करना चाहिए । यदि गाँव में मार्ग व्यवस्था नहीं है तो सामाजिक संस्था गाँव के लोगों से श्रम के द्वारा निर्माण कराने में समर्थ होते हैं । इस कार्य को आरम्भ करने में एक ही मनुष्य समर्थ है।

संकट काले तु सुतरां वर्धते..... काश्चित् संस्थाः ।

अर्थ — संकट के समय में सामाजिक कार्य और भी अधिक बढ़ जाते हैं । कहीं गरीब परिवार के विवाह योग्य लड़कियों का और लड़कों का सामूहिक विवाह भी सार्वजनिक स्थलों पर आयोजन किये जाते हैं । वहाँ के विवाह सरल रीति और आडम्बर विहीन दिखते हैं । कहीं कोई संस्था गरीब छात्रों को प्रतियोगिता परीक्षा निःशुल्क लेता है । यह सब भी महत्वपूर्ण कार्य हैं । कहीं कोई संस्था यान दुर्घटना के अवसर पर तेजी में सहायता के लिए आ जाते हैं । घायलों को अस्पताल पहुंचाते हैं । अनाथ बच्चों को उचित स्थान दिलाते हैं ।

https://www.evidyarthi.in/

भारते वर्षे नदीनां..... उपकर्त्तव्याः ।

अर्थ – भारतवर्ष में बाढ़ से जब विनाश की लीला दिखाई पड़ती है विशेषकर बिहार राज्य में , उस समय दूर में रहने वाली सामाजिक संस्था आकर विविध प्रकार की सहायता धन – जन के द्वारा करते हैं । हरेक व्यक्ति के द्वारा यदि दूसरों का उपकार किया जाता है तो मानव का जीवन सफल माना जायेगा । भारत का प्राचीन आदर्श था कि दुःख से दुःखी लोगों का दुःख दूर करने की कामना करता हूँ । जिस भारत में प्राणी संकट काल में एक – दूसरों से सहायता प्राप्त करते रहे हैं आप भी वहाँ के मनुष्यों को उपकार अवश्य करना चाहिए ।

शब्दार्थ –

अद्य = आज । नाना = अनेक । लभते = प्राप्त करता है । अल्पीकृतः = कम हो गया है । प्रयुञ्जानः = प्रयोग करते हुए । तुच्छान् = नीच , महत्त्वहीन । मन्यते = मानता है , समझता है । कदाचित् = कभी । उपकारकाः = उपकार करने वाले । एकाकित्वेन = अकेलापन के कारण । उदितः = उत्पन्न हुआ , प्रकट हुआ । इदानीम् = इस समय । स्वकीयम् = अपना । सर्वोपरि = सबसे ऊपर । जलपूरेण = जल भरने से , बाढ़ से । क्वचित् = कहीं । अवरुद्धः = रूका हुआ , बंद । पतिताः = गिरे हुए । शिशवः = बच्चे । अनाथाः = जिनके माता – पिता नहीं हैं । अपेक्षन्ते = चाहते हैं । एवम् = इस प्रकार । वर्तन्ते = हैं । एताः = ये । प्रत्युत = अपितु , वरन् । उपकारपरेण = दूसरों की भलाई करने वाले (तृतीया विभक्ति) । दृश्यते = दिखलाई देता है । कस्यापि = किसी का भी । कुत्रापि = कहीं भी । भवितुम् = होने के लिए , होने में । शक्नोति = सकता है । क्रियते = किया जाता है । काचित् = कोई (स्त्रीलिङ्ग) । कुर्यात् = करें । = कुआँ । तडागः = तालाब । रिक्तेषु = खाली (सप्तमी विभक्ति) । क्षेत्रेषु = स्थानों में , विषयों में , खेतों में । उद्यानानाम् = बगीचों की । विन्यासम् = रचना , निर्माण । निर्मातुम् = बनाने के लिए । प्रभवन्ति = समर्थ / उत्पन्न होते हैं । सुतराम् = बहुत । वर्धते = बढ़ता है । आयोज्यन्ते । कूप := मनाये जाते हैं , किये जाते हैं । किञ्च = इसके अतिरिक्त । सत्वरम् = शीघ्र । समागच्छन्ति आते हैं । प्रापयन्ति = ले जाते हैं , पहुंचाते हैं । तदानीम् = उस समय । दूरस्थाः = दूर में रहने वाले । समागत्य = आकर । विविधाम् = विभिन्न (द्वितीया विभक्ति) । एकैकेनापि = एक – एक के द्वारा भी । अपरस्य = दूसरे का । कामये कामना करता हूँ । दुःखतप्तानाम् = दु : ख से आतों का , दुःख से पीड़ितों का । यत्र = जहाँ । उपकर्त्तव्याः = उपकृत करना चाहिए ।

सन्धि – विच्छेदः –

यद्यपि = यदि + अपि (यण् सन्धि) । विज्ञानोपकरणानि = विज्ञान + उपकरणानि (गुण – सन्धिः) ।
एकैकस्य = एक + एकस्य (वृद्धि – सन्धिः) । कश्चित् = कः + चित् (विसर्ग – सन्धि) ।
संकटापन्नः = संकट + आपन्नः (दीर्घ – सन्धिः) । कश्चिन्मार्गे = कः + चित् + मार्गे (विसर्ग – सन्धिः , व्यञ्जन – सन्धिः) ।
निर्धनः = निः + धनः (विसर्ग – सन्धि) ।
दुर्बला : = दुः + बला : (विसर्ग – सन्धि) ।
महिलाश्च = महिलाः + च (विसर्ग – सन्धि) । इत्येवम् = इति + एवम् (यण – सन्धिः) । ध्यानाकर्षणाय = ध्यान + आकर्षणाय (दीर्घ – सन्धिः) ।
संकटोऽपि = संकटः + अपि (विसर्ग – सन्धिः) । कस्यापि = कस्य + अपि (दीर्घ – सन्धिः) ।
कुत्रापि = कुत्र + अपि (दीर्घ – सन्धिः) ।
नेदम् = न + इदम् (दीर्घ – सन्धिः) ।
पुस्तकालयस्य = पुस्तक + आलयस्य (दीर्घ – सन्धिः) ।
नास्ति = न + अस्ति (दीर्घ – सन्धिः) ।
तदर्थम् = तत् + अर्थम् (व्यञ्जन – सन्धिः) । एकोऽपि = एकः + अपि (विसर्ग – सन्धिः) । कार्यारम्भे = कार्य +

https://www.evidyarthi.in/

आरम्भे (दीर्घ – सन्धिः) । किञ्च = किम् + च (व्यंजन – सन्धि) ।
काश्चित् = काः + चित् (विसर्ग – सन्धि) ।
तदपि = तत् + अपि (व्यञ्जन – सन्धिः) । चिकित्सालयम् = चिकित्सा + आलयम् (दीर्घ – सन्धिः) ।
समागत्य = सम् + आगत्य ।
एकैकेनापि = एक + एकेन + अपि (वृद्धि – सन्धि , दीर्घ – सन्धिः) ।
अपरस्योपकारः = अपरस्य + उपकारः (गुण – सन्धिः) ।
अवश्यमेव = अवश्यम् + एव ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभागः

उदितः =उत् +√इ + क्त (पुंल्लिंग) , एकवचन कर्त्तव्यम=√ कृ + तव्यत् (नपुं .) , एकवचन
अवरुद्धः= अव +√रुघ् + क्त (पुल्लिंग) , एकवचन
पतिताः=√ पत् + क्त (बहुवचन)
भवितुम् =√भू+ तुमुन्
निर्मातुम्= निस् + √ मा + तुमुन्
समागच्छति= सम् + आ + √गम् लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
समागत्य= सम् + आ + √गम् +ल्यप्
कुर्वन्ति=√कृ लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
क्रियते =√कृ + यक् आत्मनेपद , लट्लकार , प्रथम पुरुष , एकवचन (कर्मवाच्ये)
आसीत्= √अस् लङ् लकार , प्रथम पुरुष एकवचन लभन्ते= √लभ् आत्मनेपदः , लट्लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/